शाश्वत टाइम्स
हिन्दी दैनिक
वर्ष : 6, अंक : 188 पृष्ठ : 12
कानपुर महानगर, शुक्रवार
15 अक्टूबर, 2021
मूल्य ₹ 3.00
www.shashwattimes.com

न्यूज़ीलैंड के खिलाफ घरेलू सीरीज में भारतीय टीम के हेड कोच हो सकते हैं राहुल द्रविड़...11

कम लागत में अधिक लाभ, करें जैव उर्वरकों का प्रयोगः डॉ एस बी पाल

शाश्वत टाइम्स कानपुर। चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉक्टर डी.आर. सिंह के निर्देश के क्रम में आज प्रसार निदेशालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. एस.बी. पाल ने बताया कि जैव उर्वरकों का प्रयोग करना फसलों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराने का एक अच्छा स्रोत है। डॉक्टर पाल ने कहा कि जैव उर्वरक मूलतः जीवाणुओं का संग्रह है जो पौधों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराते है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नहीं होते है। क्योंकि यह मृदा के ऊपरी हिस्से में रहकर अपना जीवन यापन करते है। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जैव उर्वरकों को एक बार उपयोग में लाने से यह कई वर्षो तक मृदा में बने रहते है। तथा पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते रहते है। जिसके कारण फसलों की उत्पादकता मे दुष्प्रभाव नही पड़ता है। अपितु उत्पादकता में वृद्धि होती है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराने के साथ-साथ कई मृदा जनित बीमारियों की रोकथाम में भी सहायक है। डॉक्टर पाल ने बताया की जैव उर्वरकों में एजोटोबेक्टर एक वायुजीवी जीवाणु है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को संग्रहित करने में सक्षम है। यह जीवाणु उन मृदा में प्रभावी ढंग से कार्य करते है जिन मृदा में जैविक पदार्थ पर्याप्त मात्रा में होता है। उन्होंने बताया कि एजोटोबेक्टर अदलहनी फसले जैसे गेहूं, सरसों, एवं सब्जियों में प्रयोग किया जाता है। एजोटोबेक्टर औसतन प्रति हेक्टेयर 15 से 35 किलोग्राम नाइट्रोजन मिट्टी मे संचय कर देता है। उन्होंने यह भी बताया कि इसी प्रकार राइजोबियम जीवाणु को दलहनी फसलों जैसे चना, मटर, मसूर आदि मे प्रयोग किया जाता है जो 50 से 100 किलोग्राम नत्रजन संचय कर देता है। प्रसार निदेशालय की सहायक प्राध्यापक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पीएसबी जीवाणु जो मृदा मे स्थिर एवं अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने का कार्य करता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 30 से 50 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर पौधों को उपलब्ध हो जाता है इसके साथ ही उन्होंने बताया कि फास्फोरस की उपलब्धता में 10 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की वृद्धि हो जाती है। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोधन किया जाता है। बीज उपचार हेतु उन्होंने बताया कि 200 ग्राम का जैव उर्वरक 10 किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होता है। इसको आधा लीटर पानी मे 100 ग्राम गुड या चीनी का शीरा बनाकर उसे ठंडा होने पर जैव उर्वरक मिला देते है। मृदा उपचार के लिए डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि 5 किलोग्राम जैव उर्वरक को 50 किलोग्राम गोबर में मिलाकर 24 घंटे रखने के बाद एक हेक्टेयर खेत में समान मात्रा में बिखर देते है।उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग से सभी फसलों को लाभ होता है। जिससे कि फसल उत्पादन लागत मे कमी आती है। और किसान की आय में वृद्धि होती है।

राष्ट्रीय सहारा
15/10/2021

मैदानी क्षेत्रों में भी पैदा होगा सेब, 40 पौधे कृषि विवि ने लगाये

एप्पल बेर के 28 और अंगूर की आठ प्रजातियां भी लगायीं

जैव उर्वरकों का प्रयोग कर किसान कम लागत में पायें अधिक लाभ

सीएसए प्रसार निदेशालय के वैज्ञानिकों की सलाह

उत्तर प्रदेश | लखनऊ और देहरादून से प्रकाशित राष्ट्रीय हिंदी दैनिक | देश-विदेश
जन एक्सप्रेस
लखनऊ
वर्ष: 13 | अंक: 06
मूल्य: ₹3.00/-
पेज : 12
लखनऊ | शुक्रवार | 15 अक्टूबर, 2021
@janexpressnews janexpresslive janexpresslive www.janexpresslive.com/epaper
विजयादशमी की हार्दिक शुभकामनाएं

रामलीला कमेटी आगरा द्वारा वर्चुअल... 10
दुर्गा पूजा के दौरान कट्टरपंथियों ने मूर्तियां... 12

जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नहीं होते

जन एक्सप्रेस । कानपुर नगर । चंद्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौद्योगिक विश्वविद्यालय के कुलपति डॉ. डी. आर. सिंह के निर्देश क्रम में गुरुवार को प्रसार निदेशालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. एस.बी. पाल ने फसलों के लिए उर्वरकों के प्रयोग के लाभ बताते हुए कहा कि जैव उर्वरक मूलतः जीवाणुओं का संग्रह है जिसका प्रयोग कर फसलों को पोषक तत्व उपलब्ध कराए जा सकते है। उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नही होते हैं क्योंकि यह मृदा के ऊपरी हिस्से में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं तथा एक बार उपयोग में लाने से कई वर्षों तक मृदा में बने रहते हैं और पौधों को पोषक तत्व पहुंचाते हैं। डॉ.पॉल ने बताया कि जैव उर्वरकों में एजोटोबेक्टर एक वायुजीवी जीवाणु है जो वायुमंडलीय नाइट्रोजन को संग्रहित करने में सक्षम है। उन्होंने बताया कि एजोटोबेक्टर अदलहनी फसलें जैसे गेहूं, सरसों, एवं सब्जियों में प्रयोग किया जाता है इसी प्रकार राइजोबियम जीवाणु को दलहनी फसलों जैसे चना, मटर,मसूर आदि में प्रयोग किया जाता है। प्रसार निदेशालय की सहायक प्राध्यापक डॉ. अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पीएसबी जीवाणु मिट्टी में स्थिर एवं अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने का कार्य करता है। उन्होंने बताया कि जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोधन किया जाता है। जैव उर्वरक प्रयोग से सभी फसलों को लाभ होता है। जिससे कि फसल उत्पादन लागत में कमी आती है।

लखनऊ संस्करण
वर्ष-05, अंक - 344
शुक्रवार, 15 अक्टूबर 2021
पृष्ठ 12
मूल्य 3 रु°
लखनऊ, नोएडा, झांसी और देहरादून से प्रकाशित
दैनिक भास्कर
देश का सबसे विश्वसनीय अखबार
For epaper → www.updainikbhaskar.com
06

जैव उर्वरक उपलब्ध कराते है फसलों को पोषक तत्व : डॉ पाल

भास्कर न्यूज

कानपुर। सीएसए के प्रसार निदेशालय के सहायक प्राध्यापक डॉ. एस.बी. पाल ने बताया कि जैव उर्वरकों का प्रयोग करना फसलों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराने का एक अच्छा स्रोत है। डॉक्टर पाल ने कहा कि जैव उर्वरक मूलत जीवाणुओं का संग्रह है। जो पौधों के लिए पोषक तत्व उपलब्ध कराते हैं।

उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग करने से मृदा एवं जल दूषित नहीं होते हैं। क्योंकि यह मृदा के ऊपरी हिस्से में रहकर अपना जीवन यापन करते हैं। इसके साथ ही उन्होंने यह भी कहा कि जैव उर्वरकों को एक बार उपयोग में लाने से यह कई वर्षों तक मृदा में बने रहते हैं।तथा पौधों को पोषक तत्व उपलब्ध कराते रहते हैं।जिसके कारण फसलों की उत्पादकता में दुष्प्रभाव नहीं पड़ता है।अपितु उत्पादकता में वृद्धि होती है। प्रसार निदेशालय की सहायक प्राध्यापक डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि पीएसबी जीवाणु जो मृदा में स्थिर एवं अघुलनशील फास्फोरस को घुलनशील बनाने का कार्य करता है। डॉक्टर सिंह ने बताया कि 30 से 50 किलोग्राम फास्फोरस प्रति हेक्टेयर पौधों को उपलब्ध हो जाता है इसके साथ ही उन्होंने बताया कि फास्फोरस की उपलब्धता में 10 से 15 किलोग्राम प्रति हेक्टेयर की वृद्धि हो जाती है। डॉक्टर अनिल कुमार सिंह ने बताया कि जैव उर्वरकों से बीज मृदा एवं जड़ शोधन किया जाता है। बीज उपचार हेतु उन्होंने बताया कि 200 ग्राम का जैव उर्वरक 10 किलोग्राम बीज के लिए पर्याप्त होता है। इसके बाद बीजों की बुवाई कर देते हैं। इसी प्रकार जड़ उपचार के लिए बताया कि 20 पैकेट जैव उर्वरक को 20 से 25 लीटर पानी में घोलकर एक हेक्टेयर की जड़ों हेतु 30 मिनट तक जड़ों को डुबोकर उपचारित करते हैं। मृदा उपचार के लिए डॉक्टर मिश्रा ने बताया कि 5 किलोग्राम जैव उर्वरक को 50 किलोग्राम गोबर में मिलाकर 24 घंटे रखने के बाद एक हेक्टेयर खेत में समान मात्रा में बिखर देते हैं।उन्होंने कहा कि जैव उर्वरक प्रयोग से सभी फसलों को लाभ होता है। जिससे कि फसल उत्पादन लागत में कमी आती है। और किसान की आय में वृद्धि होती है।